

# 1 कुरिथियों

## सलाम

1 यह खत पौलस की तरफ से है, जो अल्लाह के इरादे से मसीह ईसा का बुलाया हुआ रसूल है, और हमारे भाई सोसथिनेस की तरफ से।

2 मैं कुरिथुस में मौजूद अल्लाह की जमात को लिख रहा हूँ, आपको जिन्हें मसीह ईसा में मुकद्दस किया गया है, जिन्हें मुकद्दस होने के लिए बुलाया गया है। साथ ही यह खत उन तमाम लोगों के नाम भी है जो हर जगह हमारे खुदावंद ईसा मसीह का नाम लेते हैं जो उनका और हमारा खुदावंद है।

3 हमारा खुदा बाप और खुदावंद ईसा मसीह आपको फ़जल और सलामती अता करें।

## शुक्र

4 मैं हमेशा आपके लिए खुदा का शुक्र करता हूँ कि उसने आपको मसीह ईसा में इतना फ़जल बख़्शा है। 5 आपको उसमें हर लिहाज़ से दौलतमंद किया गया है, हर क्रिस्म की तक़रीर और इल्मो-इरफ़ान में। 6 क्योंकि मसीह की गवाही ने आपके दरमियान जोर पकड़ लिया है, 7 इसलिए आपको हमारे खुदावंद ईसा मसीह के जुहर का इंतज़ार करते करते किसी भी बरकत में कमी नहीं। 8 वही आपको आखिर तक मज़बूत बनाए रखेगा, इसलिए आप हमारे खुदावंद ईसा मसीह की दूसरी आमद के दिन बेइलज़ाम ठहरेंगे। 9 अल्लाह पर पूरा एतमाद किया जा सकता है जिसने आपको बुलाकर अपने फ़रज़ंद हमारे खुदावंद ईसा मसीह की रिफ़ाकत में शरीक किया है।

## कुरिथियों की पार्टीबाज़ी

10 भाइयो, मैं अपने खुदावंद ईसा मसीह के नाम में आपको ताक़ीद करता हूँ कि आप सब एक ही बात कहें। आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नहीं बल्कि एक ही सोच और एक ही राय होनी चाहिए। 11 क्योंकि मेरे भाइयो, आपके बारे में मुझे ख़लोए के घरवालों से मालूम हुआ है कि आप झगड़ों में उलझ गए हैं। 12 मतलब यह है कि आपमें से कोई कहता है, “मैं पौलस की पार्टी का हूँ,” कोई “मैं अपुल्लोस

की पार्टी का हूँ,” कोई “मैं कैफ़ा की पार्टी का हूँ” और कोई कि “मैं मसीह की पार्टी का हूँ।” 13 क्या मसीह बट गया? क्या आपकी खातिर पौलुस को सलीब पर चढ़ाया गया? या क्या आपको पौलुस के नाम से बपतिस्मा दिया गया?

14 खुदा का शुक्र है कि मैंने आपमें से किसी को बपतिस्मा नहीं दिया सिवाए क्रिसपुस और गयुस के। 15 इसलिए कोई नहीं कह सकता कि मैंने पौलुस के नाम से बपतिस्मा पाया है। 16 हों मैंने स्तिफ़नास के घराने को भी बपतिस्मा दिया। लेकिन जहाँ तक मेरा खयाल है इसके अलावा किसी और को बपतिस्मा नहीं दिया। 17 मसीह ने मुझे बपतिस्मा देने के लिए रसूल बनाकर नहीं भेजा बल्कि इसलिए कि अल्लाह की खुशखबरी सुनाऊँ। और यह काम मुझे दुनियावी हिकमत से आरास्ता तकरीर से नहीं करना है ताकि मसीह की सलीब की ताकत बेअसर न हो जाए।

#### सलीब का पैगाम

18 क्योंकि सलीब का पैगाम उनके लिए जिनका अंजाम हलाकत है बेवुकूफ़ी है जबकि हमारे लिए जिनका अंजाम नजात है यह अल्लाह की कुदरत है। 19 चुनौचे पाक नविशतों में लिखा है,

“मैं दानिशमंदों की दानिश को तबाह करूँगा  
और समझदारों की समझ को रद्द करूँगा।”

20 अब दानिशमंद शरख्स कहाँ हैं? आलिम कहाँ हैं? इस जहान का मुनाज़रे का माहिर कहाँ है? क्या अल्लाह ने दुनिया की हिकमतो-दानाई को बेवुकूफ़ी साबित नहीं किया?

21 क्योंकि अगरचे दुनिया अल्लाह की दानाई से घिरी हुई है तो भी दुनिया ने अपनी दानाई की बदौलत अल्लाह को न पहचाना। इसलिए अल्लाह को पसंद आया कि वह सलीब के पैगाम की बेवुकूफ़ी के जरीए ही ईमान रखनेवालों को नजात दे। 22 यहूदी तकाज़ा करते हैं कि इलाही बातों की तसदीक इलाही निशानों से की जाए जबकि यूनानी दानाई के वसीले से इनकी तसदीक के खाहों हैं। 23 इसके मुकाबले में हम मसीहे-मसलूब की मुनादी करते हैं। यहूदी इससे ठोकर खाकर नाराज़ हो जाते हैं जबकि ग़ैरयहूदी इसे बेवुकूफ़ी करार देते हैं। 24 लेकिन जो अल्लाह के बुलाए हुए हैं, खाह वह यहूदी हों खाह यूनानी, उनके लिए मसीह अल्लाह की कुदरत और अल्लाह की दानाई होता है। 25 क्योंकि अल्लाह की जो बात बेवुकूफ़ी लगती है वह इनसान की दानाई से ज़्यादा दानिशमंद है। और

अल्लाह की जो बात कमज़ोर लगती है वह इनसान की ताकत से ज्यादा ताकतवर है।

26 भाइयो, इस पर गौर करें कि आपका क्या हाल था जब खुदा ने आपको बुलाया। आपमें से कम हैं जो दुनिया के मेयार के मुताबिक दाना हैं, कम हैं जो ताकतवर हैं, कम हैं जो आली खानदान से हैं। 27 बल्कि जो दुनिया की निगाह में बेवकूफ है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि दानाओं को शरमिंदा करे। और जो दुनिया में कमज़ोर है उसे अल्लाह ने चुन लिया ताकि ताकतवरों को शरमिंदा करे। 28 इसी तरह जो दुनिया के नज़दीक ज़लील और हकीर है उसे अल्लाह ने चुन लिया। हाँ, जो कुछ भी नहीं है उसे उसने चुन लिया ताकि उसे नेस्त करे जो बज़ाहिर कुछ है। 29 चुनाँचे कोई भी अल्लाह के सामने अपने पर फ़ख़र नहीं कर सकता। 30 यह अल्लाह की तरफ़ से है कि आप मसीह ईसा में हैं। अल्लाह की बख़्शिश से ईसा खुद हमारी दानाई, हमारी रास्तबाज़ी, हमारी तकदीस और हमारी मख़लसी बन गया है। 31 इसलिए जिस तरह कलामे-मुक़द्दस फ़रमाता है, “फ़ख़र करनेवाला खुदावंद ही पर फ़ख़र करे।”

## 2

### पौलस की सादा मुनादी

1 भाइयो, मुझ पर भी गौर करें। जब मैं आपके पास आया तो मैंने आपको अल्लाह का भेद मोटे मोटे अलफ़ाज़ में या फ़लसफ़ियाना हिकमत का इज़हार करते हुए न सुनाया। 2 वजह क्या थी? यह कि मैंने इरादा कर रखा था कि आपके दरमियान होते हुए मैं ईसा मसीह के सिवा और कुछ न जानूँ, खासकर यह कि उसे मसलूब किया गया। 3 हाँ मैं कमज़ोरहाल, ख़ौफ़ खाते और बहुत थरथरते हुए आपके पास आया। 4 और गुफ़्तगू और मुनादी करते हुए मैंने दुनियावी हिकमत के बड़े ज़ोरदार अलफ़ाज़ की मारिफ़त आपको कायल करने की कोशिश न की, बल्कि रूहुल-कुद्स और अल्लाह की कुदरत ने मेरी बातों की तसदीक की, 5 ताकि आपका इमान इनसानाई हिकमत पर मबनी न हो बल्कि अल्लाह की कुदरत पर।

### ग़लत और सहीह दानाई

6 दानाई की बातें हम उस वक़्त करते हैं जब कामिल इमान रखनेवालों के दरमियान होते हैं। लेकिन यह दानाई मौजूदा जहान की नहीं और न इस जहान के

हाकिमों ही की है जो मिटनेवाले हैं।<sup>7</sup> बल्कि हम खुदा ही की दानाई की बातें करते हैं जो भेद की सूत में छुपी रही है। अल्लाह ने तमाम ज़मानों से पेशतर मुकर्रर किया है कि यह दानाई हमारे जलाल का बाइस बने।<sup>8</sup> इस जहान के किसी भी हाकिम ने इस दानाई को न पहचाना, क्योंकि अगर वह पहचान लेते तो फिर वह हमारे जलाली खुदावंद को मसलूब न करते।<sup>9</sup> दानाई के बारे में पाक नविशते भी यही कहते हैं,

“जो न किसी आँख ने देखा,  
न किसी कान ने सुना,  
और न इनसान के ज़हन में आया,  
उसे अल्लाह ने उनके लिए तैयार कर दिया  
जो उससे मुहब्बत रखते हैं।”

<sup>10</sup> लेकिन अल्लाह ने यही कुछ अपने रूह की मारिफ़त हम पर ज़ाहिर किया क्योंकि उसका रूह हर चीज़ का खोज लगाता है, यहाँ तक कि अल्लाह की गहराइयों का भी।<sup>11</sup> इनसान के बातिन से कौन वाकिफ़ है सिवाए इनसान की रूह के जो उसके अंदर है? इसी तरह अल्लाह से ताल्लुक रखनेवाली बातों को कोई नहीं जानता सिवाए अल्लाह के रूह के।<sup>12</sup> और हमें दुनिया की रूह नहीं मिली बल्कि वह रूह जो अल्लाह की तरफ़ से है ताकि हम उस की अताकरदा बातों को जान सकें।

<sup>13</sup> यही कुछ हम बयान करते हैं, लेकिन ऐसे अलफ़ाज़ में नहीं जो इनसानी हिकमत से हमें सिखाया गया बल्कि रूहुल-कुद्स से। यों हम रूहानी हक़ीक़तों की तशरीह रूहानी लोगों के लिए करते हैं।<sup>14</sup> जो शख्स रूहानी नहीं है वह अल्लाह के रूह की बातों को कबूल नहीं करता क्योंकि वह उसके नज़दीक बेवुकूफ़ी है। वह उन्हें पहचान नहीं सकता क्योंकि उनकी परख सिर्फ़ रूहानी शख्स ही कर सकता है।<sup>15</sup> वही हर चीज़ परख लेता है जबकि उस की अपनी परख कोई नहीं कर सकता।<sup>16</sup> चुनाँचे पाक कलाम में लिखा है,

“किसने रब की सोच को जाना?  
कौन उसको तालीम देगा?”  
लेकिन हम मसीह की सोच रखते हैं।

### 3

कुरिथुस की बचगाना हालत

1 भाइयो, मैं आपसे स्हानी लोगों की बातें न कर सका बल्कि सिर्फ जिस्मानी लोगों की। क्योंकि आप अब तक मसीह में छोटे बच्चे हैं। 2 मैंने आपको दूध पिलाया, ठोस गिज्ञा न खिलाई, क्योंकि आप उस वक्त इस काबिल नहीं थे बल्कि अब तक नहीं हैं। 3 अभी तक आप जिस्मानी हैं, क्योंकि आपमें हसद और झगडा पाया जाता है। क्या इससे यह साबित नहीं होता कि आप जिस्मानी हैं और रूह के बगैर चलते हैं? 4 जब कोई कहता है, “मैं पौलुस की पार्टी का हूँ” और दूसरा, “मैं अपुल्लोस की पार्टी का हूँ” तो क्या इससे यह ज़ाहिर नहीं होता कि आप स्हानी नहीं बल्कि इनसानी सोच रखते हैं?

### पौलुस और अपुल्लोस की हैसियत

5 अपुल्लोस की क्या हैसियत है और पौलुस की क्या? दोनों नौकर हैं जिनके वसीले से आप इमान लाए। और हममें से हर एक ने वही ख़िदमत अंजाम दी जो खुदावंद ने उसके सुपर्द की। 6 मैंने पौदे लगाए, अपुल्लोस पानी देता रहा, लेकिन अल्लाह ने उन्हें उगने दिया। 7 लिहाज़ा पौदा लगानेवाला और आबपाशी करनेवाला दोनों कुछ भी नहीं, बल्कि खुदा ही सब कुछ है जो पौदे को फलने फूलने देता है। 8 पौदा लगाने और पानी देनेवाला एक जैसे हैं, अलबत्ता हर एक को उस की मेहनत के मुताबिक मज़दूरी मिलेगी। 9 क्योंकि हम अल्लाह के मुआविन हैं जबकि आप अल्लाह का खेत और उस की इमारत हैं।

10 अल्लाह के उस फ़ज़ल के मुताबिक जो मुझे बख़शा गया मैंने एक दानिशमंद ठेकेदार की तरह बुनियाद रखी। इसके बाद कोई और उस पर इमारत तामीर कर रहा है। लेकिन हर एक ध्यान रखे कि वह बुनियाद पर इमारत किस तरह बना रहा है। 11 क्योंकि बुनियाद रखी जा चुकी है और वह है ईसा मसीह। इसके अलावा कोई भी मज़ीद कोई बुनियाद नहीं रख सकता। 12 जो भी इस बुनियाद पर कुछ तामीर करे वह मुख्तलिफ़ मवाद तो इस्तेमाल कर सकता है, मसलन सोना, चाँदी, क्रीमती पत्थर, लकड़ी, सूखी घास या भूसा, 13 लेकिन आखिर में हर एक का काम ज़ाहिर हो जाएगा। क्रियामत के दिन कुछ पोशीदा नहीं रहेगा बल्कि आग सब कुछ ज़ाहिर कर देगी। वह साबित कर देगी कि हर किसी ने कैसा काम किया है। 14 अगर उसका तामीरी काम न जला जो उसने इस बुनियाद पर किया तो उसे अज़्र मिलेगा। 15 अगर उसका काम जल गया तो उसे नुकसान पहुँचेगा। खुद तो वह बच जाएगा मगर जलते जलते।

16 क्या आपको मालूम नहीं कि आप अल्लाह का घर हैं, और आपमें अल्लाह का रह सकूनत करता है? 17 अगर कोई अल्लाह के घर को तबाह करे तो अल्लाह उसे तबाह करेगा, क्योंकि अल्लाह का घर मखसूसो-मुकद्दस है और यह घर आप ही हैं।

अपने बारे में शेखी न मारना

18 कोई अपने आपको फरेब न दे। अगर आपमें से कोई समझे कि वह इस दुनिया की नज़र में दानिशमंद है तो फिर ज़रूरी है कि वह बेवुकूफ़ बने ताकि वाकई दानिशमंद हो जाए। 19 क्योंकि इस दुनिया की हिकमत अल्लाह की नज़र में बेवुकूफी है। चुनाँचे मुकद्दस नविशतों में लिखा है, “वह दानिशमंदों को उनकी अपनी चालाकी के फंदे में फँसा देता है।” 20 यह भी लिखा है, “रब दानिशमंदों के खयालात को जानता है कि वह बातिल हैं।” 21 गरज़ कोई किसी इनसान के बारे में शेखी न मारे। सब कुछ तो आपका है। 22 पौलुस, अपुल्लोस, कैफ़ा, दुनिया, जिंदगी, मौत, मौजूदा जहान के और मुस्तक़बिल के उमूर सब कुछ आपका है। 23 लेकिन आप मसीह के हैं और मसीह अल्लाह का है।

## 4

खुदावंद के खादिम और उनका काम

1 गरज़ लोग हमें मसीह के खादिम समझें, ऐसे निगरान जिन्हें अल्लाह के भेदों को खोलने की जिम्मादारी दी गई है। 2 अब निगरानों का फ़र्ज़ यह है कि उन पर पूरा एतमाद किया जा सके। 3 मुझे इस बात की ज्यादा फिकर नहीं कि आप या कोई दुनियावी अदालत मेरा एहतसाब करे, बल्कि मैं खुद भी अपना एहतसाब नहीं करता। 4 मुझे किसी गलती का इल्म नहीं है अगरचे यह बात मुझे रास्तबाज़ करार देने के लिए काफ़ी नहीं है। खुदावंद खुद मेरा एहतसाब करता है। 5 इसलिए वक़्त से पहले किसी बात का फ़ैसला न करें। उस वक़्त तक इंतज़ार करें जब तक खुदावंद न आए। क्योंकि वही तारीकी में छुपी हुई चीज़ों को रौशनी में लाएगा और दिलों की मनसूबाबदियों को ज़ाहिर कर देगा। उस वक़्त अल्लाह खुद हर फ़रद की मुनासिब तारीफ़ करेगा।

कुरिथियों की शेखीबाज़ी

6 भाइयो, मैंने इन बातों का इतलाक़ अपने और अपुल्लोस पर किया ताकि आप हम पर गौर करते हुए अल्लाह के कलाम की हुदूद जान लें जिनसे तजावुज़ करना मुनासिब नहीं। फिर आप फूलकर एक शख्स की हिमायत करके दूसरे की मुखालफ़त नहीं करेंगे। 7 क्योंकि कौन आपको किसी दूसरे से अफ़ज़ल करार देता है? जो कुछ आपके पास है क्या वह आपको मुफ़्त नहीं मिला? और अगर मुफ़्त मिला तो इस पर शेख़ी क्यों मारते हैं गोया कि आपने उसे अपनी मेहनत से हासिल किया हो?

8 वाह जी वाह! आप सेर हो चुके हैं। आप अमीर बन चुके हैं। आप हमारे बग़ैर बादशाह बन चुके हैं। काश आप बादशाह बन चुके होते ताकि हम भी आपके साथ हुकूमत करते! 9 इसके बजाए मुझे लगता है कि अल्लाह ने हमारे लिए जो उसके रसूल हैं रोमी तमाशागाह में सबसे निचला दर्जा मुकर्रर किया है, जो उन लोगों के लिए मखसूस होता है जिन्हें सज़ाए-मौत का फ़ैसला सुनाया गया हो। हाँ, हम दुनिया, फ़रिशतों और इनसानों के सामने तमाशा बन गए हैं। 10 हम तो मसीह की खातिर बेवक़ूफ़ बन गए हैं जबकि आप मसीह में समझदार खयाल किए जाते हैं। हम कमज़ोर हैं जबकि आप ताक़तवर। आपकी इज़्ज़त की जाती है जबकि हमारी बेइज़्ज़ती। 11 अब तक हमें भूक और प्यास सताती है। हम चीथड़ों में मलबस गोया नंगे फिरते हैं। हमें मुक्के मारे जाते हैं। हमारी कोई मुस्तक़िल रिहाइशगाह नहीं। 12 और बड़ी मशक्क़त से हम अपने हाथों से रोज़ी कमाते हैं। लान-तान करनेवालों को हम बरकत देते हैं, ईज़ा देनेवालों को बरदाश्त करते हैं। 13 जो हमें बुरा-भला कहते हैं उन्हें हम दुआ देते हैं। अब तक हम दुनिया का कूडा-करकट और ग़िलाज़त बने फिरते हैं।

### पौलुस कुरिथियों का स्थानी बाप है

14 मैं आपको शरमिंदा करने के लिए यह नहीं लिख रहा, बल्कि अपने प्यारे बच्चे जानकर समझाने की गरज़ से। 15 बेशक मसीह ईसा में आपके उस्ताद तो बेशमार हैं, लेकिन बाप कम हैं। क्योंकि मसीह ईसा में मैं ही आपको अल्लाह की खुशख़बरी सुनाकर आपका बाप बना। 16 अब मैं ताकीद करता हूँ कि आप मेरे नमूने पर चलें। 17 इसलिए मैंने तीमुथियुस को आपके पास भेज दिया जो खुदावंद में मेरा प्यारा और वफ़ादार बेटा है। वह आपको मसीह ईसा में मेरी उन हिदायात की याद दिलाएगा जो मैं हर जगह और ईमानदारों की हर जमात में देता हूँ।

18 आपमें से बाज़ यों फूल गए हैं जैसे मैं अब आपके पास कभी नहीं आऊँगा।  
 19 लेकिन अगर खुदावंद की मरज़ी हुई तो जल्द आकर मालूम करूँगा कि क्या यह फूले हुए लोग सिर्फ़ बातें कर रहे हैं या कि अल्लाह की कुदरत उनमें काम कर रही है। 20 क्योंकि अल्लाह की बादशाही ख़ाली बातों से ज़ाहिर नहीं होती बल्कि अल्लाह की कुदरत से। 21 क्या आप चाहते हैं कि मैं छड़ी लेकर आपके पास आऊँ या प्यार और हलीमी की रूह में?

## 5

### ज़िनाकारी

1 यह बात हमारे कानों तक पहुँची है कि आपके दरमियान ज़िनाकारी हो रही है, बल्कि ऐसी ज़िनाकारी जिसे ग़ैरयहूदी भी रवा नहीं समझते। कहते हैं कि आपमें से किसी ने अपनी सौतेली माँ \* से शादी कर रखी है। 2 कमाल है कि आप इस फ़ेल पर नादिम नहीं बल्कि फूले फिर रहे हैं! क्या मुनासिब न होता कि आप दुख महसूस करके इस बदी के मुरतकिब को अपने दरमियान से ख़ारिज कर देते? 3 गो मैं जिस्म के लिहाज़ से आपके पास नहीं, लेकिन रूह के लिहाज़ से ज़रूर हूँ। और मैं उस शख्स पर फ़तवा इस तरह दे चुका हूँ जैसे कि मैं आपके दरमियान मौजूद हूँ। 4 जब आप हमारे खुदावंद ईसा के नाम में जमा होंगे तो मैं रूह में आपके साथ हूँगा और हमारे खुदावंद ईसा की कुदरत भी। 5 उस वक़्त ऐसे शख्स को इबलीस के हवाले करें ताकि सिर्फ़ उसका जिस्म हलाक हो जाए, लेकिन उस की रूह खुदावंद के दिन रिहाई पाए।

6 आपका फ़र्र करना अच्छा नहीं। क्या आपको मालूम नहीं कि जब हम थोड़ा-सा ख़मीर ताज़ा गुंधे हुए आटे में मिलाते हैं तो वह सारे आटे को खमीर कर देता है? 7 अपने आपको खमीर से पाक-साफ़ करके ताज़ा गुंधा हुआ आटा बन जाएँ। दर-हक़ीक़त आप हैं भी पाक, क्योंकि हमारा ईदे-फ़सह का लेला मसीह हमारे लिए ज़बह हो चुका है। 8 इसलिए आइए हम पुराने खमीरी आटे यानी बुराई और बदी को दूर करके ताज़ा गुंधे हुए आटे यानी खुलूस और सच्चाई की रोटियाँ बनाकर फ़सह की ईद मनाएँ।

9 मैंने ख़त में लिखा था कि आप ज़िनाकारों से ताल्लुक न रखें। 10 मेरा मतलब यह नहीं था कि आप इस दुनिया के ज़िनाकारों से ताल्लुक मुंक्ते कर लें या

\* 5:1 लफ़्ज़ी तरज़ुमा : बाप की बीवी, लेकिन गालिबन इससे मुराद सौतेली माँ है।

इस दुनिया के लालचियों, लुटेरों और बुतपरस्तों से। अगर आप ऐसा करते तो लाजिम होता कि आप दुनिया ही से कूच कर जाते। 11 नहीं, मेरा मतलब यह था कि आप ऐसे शख्स से ताल्लुक न रखें जो मसीह में तो भाई कहलाता है मगर है वह जिनाकार या लालची या बुतपरस्त या गाली-गलोच करनेवाला या शराबी या लुटेरा। ऐसे शख्स के साथ खाना तक भी न खाएँ।

12 मैं उन लोगों की अदालत क्यों करता फिर्न जो ईमानदारों की जमात से बाहर हैं? क्या आप खुद भी सिर्फ़ उनकी अदालत नहीं करते जो जमात के अंदर हैं? 13 बाहरवालों की अदालत तो खुदा ही करेगा। कलामे-मुकद्दस में यों लिखा है, 'शरीर को अपने दरमियान से निकाल दो।'

## 6

### मुक़दमाबाज़ी

1 आपमें यह ज़रत कैसे पैदा हुई कि जब किसी का किसी दूसरे ईमानदार के साथ तनाज़ा हो तो वह अपना झगडा बेदीनों के सामने ले जाता है न कि मुक़द्दसों के सामने? 2 क्या आप नहीं जानते कि मुक़द्दसीन दुनिया की अदालत करेंगे? और अगर आप दुनिया की अदालत करेंगे तो क्या आप इस काबिल नहीं कि छोटे मोटे झगडों का फ़ैसला कर सकें? 3 क्या आपको मालूम नहीं कि हम फ़रिशतों की अदालत करेंगे? तो फिर क्या हम रोज़मर्रा के मामलात को नहीं निपटा सकते? 4 और इस किस्म के मामलात को फ़ैसल करने के लिए आप ऐसे लोगों को क्यों मुक़रर करते हैं जो जमात की निगाह में कोई हैसियत नहीं रखते? 5 यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ। क्या आपमें एक भी सयाना शख्स नहीं जो अपने भाइयों के माबैन फ़ैसला करने के काबिल हो? 6 लेकिन नहीं। भाई अपने ही भाई पर मुक़दमा चलाता है और वह भी ग़ैरईमानदारों के सामने।

7 अब्वल तो आपसे यह ग़लती हुई कि आप एक दूसरे से मुक़दमाबाज़ी करते हैं। अगर कोई आपसे नाइनसाफ़ी कर रहा हो तो क्या बेहतर नहीं कि आप उसे ऐसा करने दें? और अगर कोई आपको ठग रहा हो तो क्या यह बेहतर नहीं कि आप उसे ठगने दें? 8 इसके बरअक्स आपका यह हाल है कि आप खुद ही नाइनसाफ़ी करते और ठगते हैं और वह भी अपने भाइयों को। 9 क्या आप नहीं जानते कि नाइनसाफ़ अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे? फ़रेब न खाएँ! हरामकार, बुतपरस्त, जिनाकार, हमजिसपरस्त, लौडेबाज़, 10 चोर, लालची, शराबी, बदज़बान, लुटेरे,

यह सब अल्लाह की बादशाही मीरास में नहीं पाएँगे। 11 आपमें से कुछ ऐसे थे भी। लेकिन आपको धोया गया, आपको मुकद्दस किया गया, आपको खुदावंद ईसा मसीह के नाम और हमारे खुदा के रूह से रास्तबाज़ बनाया गया है।

### जिस्म अल्लाह का घर है

12 मेरे लिए सब कुछ जायज़ है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। मेरे लिए सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन मैं किसी भी चीज़ को इजाज़त नहीं दूँगा कि मुझ पर हुकूमत करे। 13 बेशक खुराक पेट के लिए और पेट खुराक के लिए है, मगर अल्लाह दोनों को नेस्त कर देगा। लेकिन हम इससे यह नतीजा नहीं निकाल सकते कि जिस्म ज़िनाकारी के लिए है। हरगिज़ नहीं! जिस्म खुदावंद के लिए है और खुदावंद जिस्म के लिए। 14 अल्लाह ने अपनी कुदरत से खुदावंद ईसा को ज़िंदा किया और इसी तरह वह हमें भी ज़िंदा करेगा।

15 क्या आप नहीं जानते कि आपके जिस्म मसीह के आज्ञा हैं? तो क्या मैं मसीह के आज्ञा को लेकर फ़ाहिशा के आज्ञा बनाऊँ? हरगिज़ नहीं। 16 क्या आपको मालूम नहीं कि जो फ़ाहिशा से लिपट जाता है वह उसके साथ एक तन हो जाता है? जैसे पाक नविश्रतों में लिखा है, “वह दोनों एक हो जाते हैं।” 17 इसके बरअक्स जो खुदावंद से लिपट जाता है वह उसके साथ एक रूह हो जाता है।

18 ज़िनाकारी से भागें! इनसान से सरज़द होनेवाला हर गुनाह उसके जिस्म से बाहर होता है सिवाए ज़िना के। ज़िनाकार तो अपने ही जिस्म का गुनाह करता है। 19 क्या आप नहीं जानते कि आपका बदन रूहुल-कुदूस का घर है जो आपके अंदर सुकूनत करता है और जो आपको अल्लाह की तरफ़ से मिला है? आप अपने मालिक नहीं हैं 20 क्योंकि आपको क़ीमत अदा करके खरीदा गया है। अब अपने बदन से अल्लाह को जलाल दें।

## 7

### इज़दिवाजी ज़िंदगी

1 अब मैं आपके सवालात का जवाब देता हूँ। बेशक अच्छा है कि मर्द शादी न करे। 2 लेकिन ज़िनाकारी से बचने की खातिर हर मर्द की अपनी बीवी और हर औरत का अपना शौहर हो। 3 शौहर अपनी बीवी का हक़ अदा करे और इसी तरह बीवी अपने शौहर का। 4 बीवी अपने जिस्म पर इख़्तियार नहीं रखती बल्कि उसका शौहर। इसी तरह शौहर भी अपने जिस्म पर इख़्तियार नहीं रखता बल्कि

उस की बीवी। <sup>5</sup> चुनाँचे एक दूसरे से जुदा न हों सिवाए इसके कि आप दोनों बाहमी रजामंदी से एक वक़्त मुकर्रर कर लें ताकि दुआ के लिए ज्यादा फुरसत मिल सके। लेकिन इसके बाद आप दुबारा इकट्ठे हो जाएँ ताकि इबलीस आपके बेज़ब्त नफ़स से फ़ायदा उठाकर आपको आज़माइश में न डाले।

<sup>6</sup> यह मैं हुक्म के तौर पर नहीं बल्कि आपके हालात के पेशे-नज़र रिआयतन कह रहा हूँ। <sup>7</sup> मैं चाहता हूँ कि तमाम लोग मुझ जैसे ही हों। लेकिन हर एक को अल्लाह की तरफ़ से अलग नेमत मिली है, एक को यह नेमत, दूसरे को वह।

### तलाक़ और ग़ैरईमानदार से शादी

<sup>8</sup> मैं ग़ैरशादीशुदा अफ़राद और बेवाओं से यह कहता हूँ कि अच्छा हो अगर आप मेरी तरह ग़ैरशादीशुदा रहें। <sup>9</sup> लेकिन अगर आप अपने आप पर क़ाबू न रख सकें तो शादी कर लें। क्योंकि इससे पेशतर कि आपके शहवानी जज़बात बेलगाम होने लगें बेहतर यह है कि आप शादी कर लें।

<sup>10</sup> शादीशुदा जोड़ों को मैं नहीं बल्कि खुदावंद हुक्म देता है कि बीवी अपने शौहर से ताल्लुक मुंकते न करे। <sup>11</sup> अगर वह ऐसा कर चुकी हो तो दूसरी शादी न करे या अपने शौहर से सुलह कर ले। इसी तरह शौहर भी अपनी बीवी को तलाक़ न दे।

<sup>12</sup> दीगर लोगों को खुदावंद नहीं बल्कि मैं नसीहत करता हूँ कि अगर किसी ईमानदार भाई की बीवी ईमान नहीं लाई, लेकिन वह शौहर के साथ रहने पर राज़ी हो तो फिर वह अपनी बीवी को तलाक़ न दे। <sup>13</sup> इसी तरह अगर किसी ईमानदार खातून का शौहर ईमान नहीं लाया, लेकिन वह बीवी के साथ रहने पर रजामंद हो तो वह अपने शौहर को तलाक़ न दे। <sup>14</sup> क्योंकि जो शौहर ईमान नहीं लाया उसे उस की ईमानदार बीवी की मारिफ़त मुक़द्दस ठहराया गया है और जो बीवी ईमान नहीं लाई उसे उसके ईमानदार शौहर की मारिफ़त मुक़द्दस करार दिया गया है। अगर ऐसा न होता तो आपके बच्चे नापाक होते, मगर अब वह मुक़द्दस हैं। <sup>15</sup> लेकिन अगर ग़ैरईमानदार शौहर या बीवी अपना ताल्लुक मुंकते कर ले तो उसे जाने दें। ऐसी सूरत में ईमानदार भाई या बहन इस बंधन से आज़ाद हो गए। मगर अल्लाह ने आपको सुलह-सलामती की ज़िंदगी गुज़ारने के लिए बुलाया है। <sup>16</sup> बहन, मुमकिन है आप अपने ख़ाविंद की नजात का बाइस बन जाएँ। या भाई, मुमकिन है आप अपनी बीवी की नजात का बाइस बन जाएँ।

अल्लाह की तरफ से मुकर्ररा राह पर रहें

17 हर शख्स उसी राह पर चले जो खुदावंद ने उसके लिए मुकर्रर की और उस हालत में जिसमें अल्लाह ने उसे बुलाया है। ईमानदारों की तमाम जमातों के लिए मेरी यही हिदायत है। 18 अगर किसी को मखतून हालत में बुलाया गया तो वह नामखतून होने की कोशिश न करे। अगर किसी को नामखतूनी की हालत में बुलाया गया तो वह अपना खतना न करवाए। 19 न खतना कुछ चीज़ है और न खतने का न होना, बल्कि अल्लाह के अहकाम के मुताबिक जिंदगी गुज़ारना ही सब कुछ है। 20 हर शख्स उसी हैसियत में रहे जिसमें उसे बुलाया गया था। 21 क्या आप गुलाम थे जब खुदावंद ने आपको बुलाया? यह बात आपको परेशान न करे। अलबत्ता अगर आपको आज़ाद होने का मौका मिले तो इससे ज़रूर फायदा उठाएँ। 22 क्योंकि जो उस वक़्त गुलाम था जब खुदावंद ने उसे बुलाया वह अब खुदावंद का आज़ाद किया हुआ है। इसी तरह जो आज़ाद था जब उसे बुलाया गया वह अब मसीह का गुलाम है। 23 आपको कीमत देकर खरीदा गया है, इसलिए इनसान के गुलाम न बनें। 24 भाइयो, हर शख्स जिस हालत में बुलाया गया उसी में वह अल्लाह के सामने कायम रहे।

ग़ैरशादीशुदा लोग

25 कुँवारियों के बारे में मुझे खुदावंद की तरफ से कोई खास हुक्म नहीं मिला। तो भी मैं जिसे अल्लाह ने अपनी रहमत से काबिले-एतमाद बनाया है आप पर अपनी राय का इज़हार करता हूँ।

26 मेरी दानिस्त में मौजूदा मुसीबत के पेशे-नज़र इनसान के लिए अच्छा है कि ग़ैरशादीशुदा रहे। 27 अगर आप किसी खातून के साथ शादी के बंधन में बँध चुके हैं तो फिर इस बंधन को तोड़ने की कोशिश न करें। लेकिन अगर आप शादी के बंधन में नहीं बँधे तो फिर इसके लिए कोशिश न करें। 28 ताहम अगर आपने शादी कर ही ली है तो आपने गुनाह नहीं किया। इसी तरह अगर कुँवारी शादी कर चुकी है तो यह गुनाह नहीं। मगर ऐसे लोग जिस्मानी तौर पर मुसीबत में पड़ जाएंगे जबकि मैं आपको इससे बचाना चाहता हूँ।

29 भाइयो, मैं तो यह कहता हूँ कि वक़्त थोड़ा है। आइंदा शादीशुदा ऐसे जिंदगी बसर करें जैसे कि ग़ैरशादीशुदा हैं। 30 रोनेवाले ऐसे हों जैसे नहीं रो रहे। खुशी मनानेवाले ऐसे हों जैसे खुशी नहीं मना रहे। खरीदनेवाले ऐसे हों जैसे उनके पास

कुछ भी नहीं। 31 दुनिया से फायदा उठानेवाले ऐसे हों जैसे इसका कोई फायदा नहीं। क्योंकि इस दुनिया की मौजूदा शक्लो-सूरत खत्म होती जा रही है।

32 मैं तो चाहता हूँ कि आप फिकरों से आज़ाद रहें। गैरशादीशुदा शख्स खुदावंद के मामलों की फिकर में रहता है कि किस तरह उसे खुश करे। 33 इसके बरअक्स शादीशुदा शख्स दुनियावी फिकर में रहता है कि किस तरह अपनी बीवी को खुश करे। 34 यों वह बड़ी कश-म-कश में मुब्तला रहता है। इसी तरह गैरशादीशुदा खातून और कुँवारी खुदावंद की फिकर में रहती है कि वह जिस्मानी और रूहानी तौर पर उसके लिए मखसूसो-मुकद्दस हो। इसके मुकाबले में शादीशुदा खातून दुनियावी फिकर में रहती है कि अपने खाविंद को किस तरह खुश करे।

35 मैं यह आप ही के फ़ायदे के लिए कहता हूँ। मक़सद यह नहीं कि आप पर पाबंदियाँ लगाई जाएँ बल्कि यह कि आप शराफ़त, साबितक़दमी और यकसूई के साथ खुदावंद की हुजूरी में चलें।

36 अगर कोई समझता है, 'मैं अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी न करने से उसका हक मार रहा हूँ' या यह कि 'मेरी उसके लिए खाहिश हद से ज़्यादा है, इसलिए शादी होनी चाहिए' तो फिर वह अपने इरादे को पूरा करे, यह गुनाह नहीं। वह शादी कर ले। 37 लेकिन इसके बरअक्स अगर उसने शादी न करने का पुख़्ता अज़म कर लिया है और वह मजबूर नहीं बल्कि अपने इरादे पर इख़्तियार रखता है और उसने अपने दिल में फ़ैसला कर लिया है कि अपनी कुँवारी लड़की को ऐसे ही रहने दे तो उसने अच्छा किया। 38 गरज़ जिसने अपनी कुँवारी मंगेतर से शादी कर ली है उसने अच्छा किया है, लेकिन जिसने नहीं की उसने और भी अच्छा किया है।

39 जब तक खाविंद जिंदा है बीवी को उससे रिश्ता तोड़ने की इजाज़त नहीं। खाविंद की वफ़ात के बाद वह आज़ाद है कि जिससे चाहे शादी कर ले, मगर सिर्फ़ खुदावंद में। 40 लेकिन मेरी दानिस्त में अगर वह ऐसे ही रहे तो ज़्यादा मुबारक होगी। और मैं समझता हूँ कि मुझमें भी अल्लाह का रूह है।

## 8

### बुतों की कुरबानियाँ

1 अब मैं बुतों की कुरबानी के बारे में बात करता हूँ। हम जानते हैं कि हम सब साहबे-इल्म हैं। इल्म इनसान के फूलने का बाइस बनता है जबकि मुहब्बत उस की तामीर करती है। 2 जो समझता है कि उसने कुछ जान लिया है उसने अब तक

उस तरह नहीं जाना जिस तरह उसको जानना चाहिए। <sup>3</sup> लेकिन जो अल्लाह से मुहब्बत रखता है उसे अल्लाह ने जान लिया है।

<sup>4</sup> बुतों की कुरबानी खाने के ज़िम्न में हम जानते हैं कि दुनिया में बुत कोई चीज़ नहीं और कि रब के सिवा कोई और खुदा नहीं है। <sup>5</sup> बेशक आसमानो-ज़मीन पर कई नाम-निहाद देवता होते हैं, हाँ दरअसल बहुतेरे देवताओं और खुदावंदों की पूजा की जाती है। <sup>6</sup> तो भी हम जानते हैं कि फ़क़त एक ही खुदा है, हमारा बाप जिसने सब कुछ पैदा किया है और जिसके लिए हम ज़िंदगी गुज़ारते हैं। और एक ही खुदावंद है यानी ईसा मसीह जिसके वसीले से सब कुछ वुजूद में आया है और जिससे हमें ज़िंदगी हासिल है।

<sup>7</sup> लेकिन हर किसी को इसका इल्म नहीं। बाज़ ईमानदार तो अब तक यह सोचने के आदी हैं कि बुत का वुजूद है। इसलिए जब वह किसी बुत की कुरबानी का गोश्त खाते हैं तो वह समझते हैं कि हम ऐसा करने से उस बुत की पूजा कर रहे हैं। यों उनका ज़मीर कमज़ोर होने की वजह से आलूदा हो जाता है। <sup>8</sup> हक़ीक़त तो यह है कि हमारा अल्लाह को पसंद आना इस बात पर मबनी नहीं कि हम क्या खाते हैं और क्या नहीं खाते। न परहेज़ करने से हमें कोई नुक़सान पहुँचता है और न खा लेने से कोई फ़ायदा।

<sup>9</sup> लेकिन ख़बरदार रहें कि आपकी यह आज़ादी कमज़ोरों के लिए ठोकर का बाइस न बने। <sup>10</sup> क्योंकि अगर कोई कमज़ोरज़मीर शरख़्स आपको बुतखाने में खाना खाते हुए देखे तो क्या उसे उसके ज़मीर के खिलाफ़ बुतों की कुरबानियाँ खाने पर उभारा नहीं जाएगा? <sup>11</sup> इस तरह आपका कमज़ोर भाई जिसकी खातिर मसीह कुरबान हुआ आपके इल्मो-इरफ़ान की वजह से हलाक़ हो जाएगा। <sup>12</sup> जब आप इस तरह अपने भाइयों का गुनाह करते और उनके कमज़ोर ज़मीर को मजसूह करते हैं तो आप मसीह का ही गुनाह करते हैं। <sup>13</sup> इसलिए अगर ऐसा खाना मेरे भाई को सहीह राह से भटकाने का बाइस बने तो मैं कभी गोश्त नहीं खाऊँगा ताकि अपने भाई की गुमराही का बाइस न बनूँ।

## 9

### रसूल का हक़

<sup>1</sup> क्या मैं आज़ाद नहीं? क्या मैं मसीह का रसूल नहीं? क्या मैंने ईसा को नहीं देखा जो हमारा खुदावंद है? क्या आप खुदावंद में मेरी मेहनत का फ़ल नहीं हैं?

2 अगरचे मैं दूसरों के नज़दीक मसीह का रसूल नहीं, लेकिन आपके नज़दीक तो ज़रूर हूँ। खुदावंद में आप ही मेरी रिसालत पर मुहर है।

3 जो मेरी बाज़पुर्स करना चाहते हैं उन्हें मैं अपने दिफ़ा में कहता हूँ, 4 क्या हमें खाने-पीने का हक़ नहीं? 5 क्या हमें हक़ नहीं कि शादी करके अपनी बीवी को साथ लिए फिरे? दूसरे रसूल और खुदावंद के भाई और कैफ़ा तो ऐसा ही करते हैं। 6 क्या मुझे और बरनबास ही को अपनी खिदमत के अज़्र में कुछ पाने का हक़ नहीं? 7 कौन-सा फ़ौज़ी अपने खर्च पर जंग लड़ता है? कौन अंगूर का बाग़ लगाकर उसके फल से अपना हिस्सा नहीं पाता? या कौन रेवड़ की गल्लाबानी करके उसके दूध से अपना हिस्सा नहीं पाता?

8 क्या मैं यह फ़क़त इनसानी सोच के तहत कह रहा हूँ? क्या शरीअत भी यही नहीं कहती? 9 तौरैत में लिखा है, “जब तू फ़सल गाहने के लिए उस पर बैल चलने देता है तो उसका मुँह बाँधकर न रखना।” क्या अल्लाह सिर्फ़ बैलों की फ़िकर करता है 10 या वह हमारी खातिर यह फ़रमाता है? हाँ, ज़रूर हमारी खातिर क्योंकि हल चलानेवाला इस उम्मीद पर चलाता है कि उसे कुछ मिलेगा। इसी तरह गाहनेवाला इस उम्मीद पर गाहता है कि वह पैदावार में से अपना हिस्सा पाएगा। 11 हमने आपके लिए स्हानी बीज बोया है। तो क्या यह नामुनासिब है अगर हम आपसे जिस्मानी फ़सल काटें? 12 अगर दूसरों को आपसे अपना हिस्सा लेने का हक़ है तो क्या हमारा उनसे ज़्यादा हक़ नहीं बनता?

लेकिन हमने इस हक़ से फ़ायदा नहीं उठाया। हम सब कुछ बरदाश्त करते हैं ताकि मसीह की खुशख़बरी के लिए किसी भी तरह से स्कावट का बाइस न बनें। 13 क्या आप नहीं जानते कि बैतुल-मुक़द्दस में खिदमत करनेवालों की ज़रूरियात बैतुल-मुक़द्दस ही से पूरी की जाती हैं? जो कुरबानियाँ चढ़ाने के काम में मसरूफ़ रहते हैं उन्हें कुरबानियों से ही हिस्सा मिलता है। 14 इसी तरह खुदावंद ने मुकर्रर किया है कि इंजील की खुशख़बरी की मुनादी करनेवालों की ज़रूरियात उनसे पूरी की जाएँ जो इस खिदमत से फ़ायदा उठाते हैं।

15 लेकिन मैंने किसी तरह भी इससे फ़ायदा नहीं उठाया, और न इसलिए लिखा है कि मेरे साथ ऐसा सुलूक किया जाए। नहीं, इससे पहले कि फ़ख़र करने का मेरा यह हक़ मुझे छीन लिया जाए बेहतर यह है कि मैं मर जाऊँ। 16 लेकिन अल्लाह की खुशख़बरी की मुनादी करना मेरे लिए फ़ख़र का बाइस नहीं। मैं तो यह करने पर मजबूर हूँ। मुझ पर अफ़सोस अगर इस खुशख़बरी की मुनादी न करूँ। 17 अगर

मैं यह अपनी मरज़ी से करता तो फिर अज़्र का मेरा हक बनता। लेकिन ऐसा नहीं है बल्कि खुदा ही ने मुझे यह ज़िम्मादारी दी है। 18 तो फिर मेरा अज़्र क्या है? यह कि मैं इंजील की खुशखबरी मुफ्त सुनाऊँ और अपने उस हक से फायदा न उठाऊँ जो मुझे उस की मुनादी करने से हासिल है।

19 अगरचे मैं सब लोगों से आज़ाद हूँ फिर भी मैंने अपने आपको सबका गुलाम बना लिया ताकि ज़्यादा से ज़्यादा लोगों को जीत लूँ। 20 मैं यहूदियों के दरमियान यहूदी की मानिद बना ताकि यहूदियों को जीत लूँ। मूसवी शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उनकी मानिद बना ताकि उन्हें जीत लूँ, गो मैं शरीअत के मातहत नहीं। 21 मूसवी शरीअत के बग़ैर ज़िंदगी गुज़ारनेवालों के दरमियान मैं उन्हीं की मानिद बना ताकि उन्हें जीत लूँ। इसका मतलब यह नहीं कि मैं अल्लाह की शरीअत के ताबे नहीं हूँ। हक़ीक़त में मैं मसीह की शरीअत के तहत ज़िंदगी गुज़ारता हूँ। 22 मैं कमज़ोरों के लिए कमज़ोर बना ताकि उन्हें जीत लूँ। सबके लिए मैं सब कुछ बना ताकि हर मुमकिन तरीक़े से बाज़ को बचा सकूँ। 23 जो कुछ भी करता हूँ अल्लाह की खुशखबरी के वास्ते करता हूँ ताकि इसकी बरकात में शरीक हो जाऊँ।

24 क्या आप नहीं जानते कि स्टेडियम में दौड़ते तो सब ही हैं, लेकिन इनाम एक ही शख्स हासिल करता है? चुनाँचे ऐसे दौड़ें कि आप ही जीतें। 25 खेलों में शरीक होनेवाला हर शख्स अपने आपको सख्त नज़मो-जब्त का पाबंद रखता है। वह फ़ानी ताज़ पाने के लिए ऐसा करते हैं, लेकिन हम ग़ैरफ़ानी ताज़ पाने के लिए। 26 चुनाँचे मैं हर वक़्त मनज़िले-मक़सूद को पेशे-नज़र रखते हुए दौड़ता हूँ। और मैं इसी तरह बाक्सिंग भी करता हूँ, मैं हवा में मुक्के नहीं मारता बल्कि निशाने को। 27 मैं अपने बदन को मारता कूटता और इसे अपना गुलाम बनाता हूँ, ऐसा न हो कि दूसरों में मुनादी करके खुद नामक़बूल ठहरूँ।

## 10

### इसराईल का इबरतनाक तज़रबा

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप इस बात से नावाक़िफ़ रहें कि हमारे बापदादा सब बादल के नीचे थे। वह सब समुंदर में से गुज़रे। 2 उन सबने बादल और समुंदर में मूसा का बपतिस्मा लिया। 3 सबने एक ही रूहानी खुराक खाई 4 और सबने एक ही रूहानी पानी पिया। क्योंकि मसीह रूहानी चटान की सूरत में उनके साथ

साथ चलता रहा और वही उन सबको पानी पिलाता रहा। 5 इसके बावजूद उनमें से बेशतर लोग अल्लाह को पसंद न आए, इसलिए वह रेगिस्तान में हलाक हो गए।

6 यह सब कुछ हमारी इब्रत के लिए वाके हुआ ताकि हम उन लोगों की तरह बुरी चीजों की हवस न करें। 7 उनमें से बाज़ की तरह बुतपरस्त न बनें, जैसे मुकद्दस नविशतों में लिखा है, “लोग खाने-पीने के लिए बैठ गए और फिर उठकर रंगरलियों में अपने दिल बहलाने लगे।” 8 हम ज़िना भी न करें जैसे उनमें से बाज़ ने किया और नतीजे में एक ही दिन में 23,000 अफ़राद ढेर हो गए। 9 हम खुदावंद की आजमाइश भी न करें जिस तरह उनमें से बाज़ ने की और नतीजे में साँपों से हलाक हुए। 10 और न बुडबुडाएँ जिस तरह उनमें से बाज़ बुडबुडाने लगे और नतीजे में हलाक करनेवाले फ़रिश्ते के हाथों मारे गए।

11 यह माजरे इब्रत की खातिर उन पर वाके हुए और हम अख़ीर ज़माने में रहनेवालों की नसीहत के लिए लिखे गए।

12 गरज़ जो समझता है कि वह मज़बूती से खड़ा है, ख़बरदार रहे कि गिर न पड़े। 13 आप सिर्फ़ ऐसी आजमाइशों में पड़े हैं जो इनसान के लिए आम होती हैं। और अल्लाह वफ़ादार है। वह आपको आपकी ताकत से ज्यादा आजमाइश में नहीं पड़ने देगा। जब आप आजमाइश में पड़ जाएंगे तो वह उसमें से निकलने की राह भी पैदा कर देगा ताकि आप उसे बरदाश्त कर सकें।

### अशाए-रब्बानी और बुतपरस्ती में तज़ाद

14 गरज़ मेरे प्यारो, बुतपरस्ती से भागें। 15 मैं आपको समझदार जानकर बात कर रहा हूँ। आप खुद मेरी इस बात का फ़ैसला करें। 16 जब हम अशाए-रब्बानी के मौक़े पर बरकत के प्याले को बरकत देकर उसमें से पीते हैं तो क्या हम यों मसीह के खून में शरीक नहीं होते? और जब हम रोटी तोड़कर खाते हैं तो क्या मसीह के बदन में शरीक नहीं होते? 17 रोटी तो एक ही है, इसलिए हम जो बहुत-से हैं एक ही बदन हैं, क्योंकि हम सब एक ही रोटी में शरीक होते हैं।

18 बनी इसराईल पर गौर करें। क्या बैतुल-मुक़द्दस में कुरबानियाँ खानेवाले कुरबानगाह की रिफ़ाक़त में शरीक नहीं होते? 19 क्या मैं यह कहना चाहता हूँ कि बुतों के चढावे की कोई हैसियत है? या कि बुत की कोई हैसियत है? हरगिज़ नहीं। 20 मैं यह कहता हूँ कि जो कुरबानियाँ वह गुज़रँते हैं अल्लाह को नहीं बल्कि शयातीन को गुज़रँते हैं। और मैं नहीं चाहता कि आप शयातीन की रिफ़ाक़त में शरीक हों। 21 आप खुदावंद के प्याले और साथ ही शयातीन के प्याले से नहीं पी

सकते। आप खुदावंद के रिफ़ाक़ती खाने और साथ ही शयातीन के रिफ़ाक़ती खाने में शरीक नहीं हो सकते। 22 या क्या हम अल्लाह की ग़ैरत को उकसाना चाहते हैं? क्या हम उससे ताक़तवर हैं?

### दूसरों के ज़मीर का लिहाज़ करना

23 सब कुछ रवा तो है, लेकिन सब कुछ मुफ़ीद नहीं। सब कुछ जायज़ तो है, लेकिन सब कुछ हमारी तामीरो-तरक्की का बाइस नहीं होता। 24 हर कोई अपने ही फ़ायदे की तलाश में न रहे बल्कि दूसरे के।

25 बाज़ार में जो कुछ बिकता है उसे खाएँ और अपने ज़मीर को मुतमइन करने की खातिर पूछ-गछ न करें, 26 क्योंकि “ज़मीन और जो कुछ उस पर है रब का है।”

27 अगर कोई ग़ैरईमानदार आपकी दावत करे और आप उस दावत को क़बूल कर लें तो आपके सामने जो कुछ भी रखा जाए उसे खाएँ। अपने ज़मीर के इतमीनान के लिए तफ़तीश न करें। 28 लेकिन अगर कोई आपको बता दे, “यह बुतों का चढावा है” तो फिर उस शख्स की खातिर जिसने आपको आगाह किया है और ज़मीर की खातिर उसे न खाएँ। 29 मतलब है अपने ज़मीर की खातिर नहीं बल्कि दूसरे के ज़मीर की खातिर। क्योंकि यह किस तरह हो सकता है कि किसी दूसरे का ज़मीर मेरी आज़ादी के बारे में फ़ैसला करे? 30 अगर मैं खुदा का शक्र करके किसी खाने में शरीक होता हूँ तो फिर मुझे क्यों बुरा कहा जाए? मैं तो उसे खुदा का शक्र करके खाता हूँ।

31 चुनाँचे सब कुछ अल्लाह के जलाल की खातिर करें, खाह आप खाएँ, पिँएँ या और कुछ करें। 32 किसी के लिए ठोकर का बाइस न बनें, न यहदियों के लिए, न यूनानियों के लिए और न अल्लाह की जमात के लिए। 33 इसी तरह मैं भी सबको पसंद आने की हर मुमकिन कोशिश करता हूँ। मैं अपने ही फ़ायदे के खयाल में नहीं रहता बल्कि दूसरों के ताकि बहुतेरे नजात पाएँ।

## 11

1 मेरे नमूने पर चलें जिस तरह मैं मसीह के नमूने पर चलता हूँ।

इबादत में ख़वातीन का किरदार

2 शाबाश कि आप हर तरह से मुझे याद रखते हैं। आपने रिवायात को यों महफूज़ रखा है जिस तरह मैंने उन्हें आपके सुपर्द किया था। 3 लेकिन मैं आपको एक और बात से आगाह करना चाहता हूँ। हर मर्द का सर मसीह है जबकि औरत का सर मर्द और मसीह का सर अल्लाह है। 4 अगर कोई मर्द सर ढाँककर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज्जती करता है। 5 और अगर कोई खातून नंगे सर दुआ या नबुव्वत करे तो वह अपने सर की बेइज्जती करती है, गोया वह सर मुंडी है। 6 जो औरत अपने सर पर दोपट्टा नहीं लेती वह टिंड करवाए। लेकिन अगर टिंड करवाना या सर मुँडवाना उसके लिए बेइज्जती का बाइस है तो फिर वह अपने सर को ज़रूर ढाँके। 7 लेकिन मर्द के लिए लाज़िम है कि वह अपने सर को न ढाँके क्योंकि वह अल्लाह की सूरत और जलाल को मुनअकिस करता है। लेकिन औरत मर्द का जलाल मुनअकिस करती है, 8 क्योंकि पहला मर्द औरत से नहीं निकला बल्कि औरत मर्द से निकली है। 9 मर्द को औरत के लिए खलक नहीं किया गया बल्कि औरत को मर्द के लिए। 10 इस वजह से औरत फ़रिशतों को पेशे-नज़र रखकर अपने सर पर दोपट्टा ले जो उस पर इख्तियार का निशान है। 11 लेकिन याद रहे कि खुदावंद में न औरत मर्द के बग़ैर कुछ है और न मर्द औरत के बग़ैर। 12 क्योंकि अगरचे इब्तिदा में औरत मर्द से निकली, लेकिन अब मर्द औरत ही से पैदा होता है। और हर शै अल्लाह से निकलती है।

13 आप खुद फ़ैसला करें। क्या मुनासिब है कि कोई औरत अल्लाह के सामने नंगे सर दुआ करे? 14 क्या फ़ितरत भी यह नहीं सिखाती कि लंबे बाल मर्द की बेइज्जती का बाइस हैं 15 जबकि औरत के लंबे बाल उस की इज्जत का मूजिब हैं? क्योंकि बाल उसे ढाँपने के लिए दिए गए हैं। 16 लेकिन इस सिलसिले में अगर कोई झगड़ने का शौक रखे तो जान ले कि न हमारा यह दस्तूर है, न अल्लाह की जमातों का।

### अशाए-रब्बानी

17 मैं आपको एक और हिदायत देता हूँ। लेकिन इस सिलसिले में मेरे पास आपके लिए तारीफ़ी अलफ़ाज़ नहीं, क्योंकि आपका जमा होना आपकी बेहतरी का बाइस नहीं होता बल्कि नुक़सान का बाइस। 18 अब्बल तो मैं सुनता हूँ कि जब आप जमात की सूरत में इकट्ठे होते हैं तो आपके दरमियान पार्टीबाज़ी नज़र आती है। और किसी हद तक मुझे इसका यक़ीन भी है। 19 लाज़िम है कि आपके

दरमियान मुख्तलिफ़ पार्टियों नज़र आएँ ताकि आपमें से वह जाहिर हो जाएँ जो आजमाने के बाद भी सच्चे निकलें। 20 जब आप जमा होते हैं तो जो खाना आप खाते हैं उसका अशाए-रब्बानी से कोई ताल्लुक नहीं रहा। 21 क्योंकि हर शख्स दूसरों का इंतज़ार किए बग़ैर अपना खाना खाने लगता है। नतीजे में एक भूका रहता है जबकि दूसरे को नशा हो जाता है। 22 ताज्जुब है! क्या खाने-पीने के लिए आपके घर नहीं? या क्या आप अल्लाह की जमात को हक़ीर जानकर उनको जो खाली हाथ आए हैं शरमिंदा करना चाहते हैं? मैं क्या कहूँ? क्या आपको शाबाश दूँ? इसमें मैं आपको शाबाश नहीं दे सकता।

23 क्योंकि जो कुछ मैंने आपके सुपुर्द किया है वह मुझे ख़ुदावंद ही से मिला है। जिस रात ख़ुदावंद ईसा को दुश्मन के हवाले कर दिया गया उसने रोटी लेकर 24 शुक्रगुज़ारी की दुआ की और उसे टुकड़े करके कहा, “यह मेरा बदन है जो तुम्हारे लिए दिया जाता है। मुझे याद करने के लिए यही किया करो।” 25 इसी तरह उसने खाने के बाद प्याला लेकर कहा, “मैं का यह प्याला वह नया अहद है जो मेरे खून के ज़रीए कायम किया जाता है। जब कभी इसे पियो तो मुझे याद करने के लिए पियो।” 26 क्योंकि जब भी आप यह रोटी खाते और यह प्याला पीते हैं तो ख़ुदावंद की मौत का एलान करते हैं, जब तक वह वापस न आए।

27 चुनाँचे जो नालायक तौर पर ख़ुदावंद की रोटी खाए और उसका प्याला पिए वह ख़ुदावंद के बदन और खून का गुनाह करता है और कुसूरवार ठहरेगा। 28 हर शख्स अपने आपको परखकर ही इस रोटी में से खाए और प्याले में से पिए। 29 जो रोटी खाते और प्याला पीते वक़्त ख़ुदावंद के बदन का एहतराम नहीं करता वह अपने आप पर अल्लाह की अदालत लाता है। 30 इसी लिए आपके दरमियान बहुतेरे कमज़ोर और बीमार हैं बल्कि बहुत-से मौत की नींद सो चुके हैं। 31 अगर हम अपने आपको जाँचते तो अल्लाह की अदालत से बचे रहते। 32 लेकिन ख़ुदावंद हमारी अदालत करने से हमारी तरबियत करता है ताकि हम दुनिया के साथ मुजरिम न ठहरें।

33 गरज़ मेरे भाइयो, जब आप खाने के लिए जमा होते हैं तो एक दूसरे का इंतज़ार करें। 34 अगर किसी को भूक लगी हो तो वह अपने घर में ही खाना खा ले ताकि आपका जमा होना आपकी अदालत का बाइस न ठहरे। दीगर हिदायात में आपको उस वक़्त दूँगा जब आपके पास आऊँगा।

## 12

### एक रूह और मुख्तलिफ़ नेमतें

1 भाइयो, मैं नहीं चाहता कि आप रूहानी नेमतों के बारे में नावाकिफ़ रहें।  
2 आप जानते हैं कि ईमान लाने से पेशतर आपको बार बार बहकाया और गूँगे बुतों की तरफ़ खींचा जाता था। 3 इसी के पेशे-नज़र मैं आपको आगाह करता हूँ कि अल्लाह के रूह की हिदायत से बोलनेवाला कभी नहीं कहेगा, “ईसा पर लानत।” और रूहल-कुदूस की हिदायत से बोलनेवाले के सिवा कोई नहीं कहेगा, “ईसा खुदावंद है।”

4 गो तरह तरह की नेमतें होती हैं, लेकिन रूह एक ही है। 5 तरह तरह की खिदमतें होती हैं, लेकिन खुदावंद एक ही है। 6 अल्लाह अपनी कुदरत का इज़हार मुख्तलिफ़ अंदाज़ से करता है, लेकिन खुदा एक ही है जो सबमें हर तरह का काम करता है। 7 हममें से हर एक में रूहल-कुदूस का इज़हार किसी नेमत से होता है। यह नेमतें इसलिए दी जाती हैं ताकि हम एक दूसरे की मदद करें। 8 एक को रूहल-कुदूस हिकमत का कलाम अता करता है, दूसरे को वही रूह इल्मो-इरफ़ान का कलाम। 9 तीसरे को वही रूह पुख़्ता ईमान देता है और चौथे को वही एक रूह शफ़ा देने की नेमतें। 10 वह एक को मोजिज़े करने की ताक़त देता है, दूसरे को नबुव्वत करने की सलाहियत और तीसरे को मुख्तलिफ़ रूहों में इम्तियाज़ करने की नेमत। एक को उससे ग़ैरज़बानें बोलने की नेमत मिलती है और दूसरे को इनका तरजुमा करने की। 11 वही एक रूह यह तमाम नेमतें तक़सीम करता है। और वही फ़ैसला करता है कि किस को क्या नेमत मिलनी है।

### एक जिस्म और मुख्तलिफ़ आज़ा

12 इनसानी जिस्म के बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन यह तमाम आज़ा एक ही बदन को तश्कील देते हैं। मसीह का बदन भी ऐसा है। 13 खाह हम यहूदी थे या यूनानी, गुलाम थे या आज़ाद, बपतिस्मे से हम सबको एक ही रूह की मारिफ़त एक ही बदन में शामिल किया गया है, हम सबको एक ही रूह पिलाया गया है।

14 बदन के बहुत-से हिस्से होते हैं, न सिर्फ़ एक। 15 फ़र्ज़ करें कि पाँव कहे, “मैं हाथ नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उसका बदन से ताल्लुक़ ख़त्म हो जाएगा? 16 या फ़र्ज़ करें कि कान कहे, “मैं आँख नहीं हूँ इसलिए बदन का हिस्सा नहीं।” क्या यह कहने पर उसका बदन से नाता टूट

जाएगा? 17 अगर पूरा जिस्म आँख ही होता तो फिर सुनने की सलाहियत कहाँ होती? अगर सारा बदन कान ही होता तो फिर सूँघने का क्या बनता? 18 लेकिन अल्लाह ने जिस्म के मुख्तलिफ़ आज़ा बनाकर हर एक को वहाँ लगाया जहाँ वह चाहता था। 19 अगर एक ही अज़ु पूरा जिस्म होता तो फिर यह किस किस का जिस्म होता? 20 नहीं, बहुत-से आज़ा होते हैं, लेकिन जिस्म एक ही है।

21 आँख हाथ से नहीं कह सकती, “मुझे तेरी ज़रूरत नहीं,” न सर पाँवों से कह सकता है, “मुझे तुम्हारी ज़रूरत नहीं।” 22 बल्कि अगर देखा जाए तो अकसर ऐसा होता है कि जिस्म के जो आज़ा ज़्यादा कमज़ोर लगते हैं उनकी ज़्यादा ज़रूरत होती है। 23 वह आज़ा जिन्हें हम कम इज़्जत के लायक समझते हैं उन्हें हम ज़्यादा इज़्जत के साथ ढाँप लेते हैं, और वह आज़ा जिन्हें हम शर्म से छुपाकर रखते हैं उन्हीं का हम ज़्यादा एहताराम करते हैं। 24 इसके बरअक्स हमारे इज़्जतदार आज़ा को इसकी ज़रूरत ही नहीं होती कि हम उनका खास एहताराम करें। लेकिन अल्लाह ने जिस्म को इस तरह तरतीब दिया कि उसने कमकदर आज़ा को ज़्यादा इज़्जतदार ठहराया, 25 ताकि जिस्म के आज़ा में तफ़रका न हो बल्कि वह एक दूसरे की फ़िकर करें। 26 अगर एक अज़ु दुख में हो तो उसके साथ दीगर तमाम आज़ा भी दुख महसूस करते हैं। अगर एक अज़ु सरफ़राज़ हो जाए तो उसके साथ बाक़ी तमाम आज़ा भी मसूर होते हैं।

27 आप सब मिलकर मसीह का बदन हैं और इनफ़िरादी तौर पर उसके मुख्तलिफ़ आज़ा। 28 और अल्लाह ने अपनी जमात में पहले रसूल, दूसरे नबी और तीसरे उस्ताद मुकर्रर किए हैं। फिर उसने ऐसे लोग भी मुकर्रर किए हैं जो मोज़िजे करते, शफ़ा देते, दूसरों की मदद करते, इंतज़ाम चलाते और मुख्तलिफ़ किसम की ग़ैरज़बानें बोलते हैं। 29 क्या सब रसूल हैं? क्या सब नबी हैं? क्या सब उस्ताद हैं? क्या सब मोज़िजे करते हैं? 30 क्या सबको शफ़ा देने की नेमतें हासिल हैं? क्या सब ग़ैरज़बानें बोलते हैं? क्या सब इनका तरज़ुमा करते हैं? 31 लेकिन आप उन नेमतों की तलाश में रहें जो अफ़ज़ल हैं।

अब मैं आपको इससे कहीं उम्दा राह बताता हूँ।

## 13

1 अगर मैं इनसानों और फ़रिशतों की ज़बानें बोलूँ, लेकिन मुहब्बत न रखूँ तो फिर मैं बस गूँजता हुआ घड़ियाल या ठनठनाती हुई झॉझ ही हूँ। 2 अगर मेरी नबुव्वत की नेमत हो और मुझे तमाम भेदों और हर इल्म से वाक्फ़ियत हो, साथ ही मेरा ऐसा ईमान हो कि पहाड़ों को खिसका सकूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से खाली हो तो मैं कुछ भी नहीं। 3 अगर मैं अपना सारा माल ग़रीबों में तक्रूसीम कर दूँ बल्कि अपना बदन जलाए जाने के लिए दे दूँ, लेकिन मेरा दिल मुहब्बत से खाली हो तो मुझे कुछ फ़ायदा नहीं।

4 मुहब्बत सब्र से काम लेती है, मुहब्बत मेहरबान है। न यह हसद करती है न डींगें मारती है। यह फूलती भी नहीं। 5 मुहब्बत बदतमीज़ी नहीं करती न अपने ही फ़ायदे की तलाश में रहती है। यह जल्दी से गुस्से में नहीं आ जाती और दूसरों की ग़लतियों का रिकार्ड नहीं रखती। 6 यह नाइनसाफ़ी देखकर ख़ुश नहीं होती बल्कि सच्चाई के ग़ालिब आने पर ही ख़ुशी मनाती है। 7 यह हमेशा दूसरों की कमज़ोरियाँ बरदाश्त करती है, हमेशा एतमाद करती है, हमेशा उम्मीद रखती है, हमेशा साबितकदम रहती है।

8 मुहब्बत कभी ख़त्म नहीं होती। इसके मुक़ाबले में नबुव्वतें ख़त्म हो जाएँगी, ग़ैरज़बानें जाती रहेंगी, इल्म मिट जाएगा। 9 क्योंकि इस वक़्त हमारा इल्म नामुकम्मल है और हमारी नबुव्वत सब कुछ ज़ाहिर नहीं करती। 10 लेकिन जब वह कुछ आया जो कामिल है तो यह अधूरी चीज़ें जाती रहेंगी।

11 जब मैं बच्चा था तो बच्चे की तरह बोलता, बच्चे की-सी सोच रखता और बच्चे की-सी समझ से काम लेता था। लेकिन अब मैं बालिग हूँ, इसलिए मैंने बच्चे का-सा अंदाज़ छोड़ दिया है। 12 इस वक़्त हमें आईने में धुँधला-सा दिखाई देता है, लेकिन उस वक़्त हम स्वरू देखेंगे। अब मैं जुज़वी तौर पर जानता हूँ, लेकिन उस वक़्त कामिल तौर से जान लूँगा, ऐसे ही जैसे अल्लाह ने मुझे पहले से जान लिया है।

13 ग़रज़ ईमान, उम्मीद और मुहब्बत तीनों कायम रहते हैं, लेकिन इनमें अफ़ज़ल मुहब्बत है।

## 14

नबुव्वत और ग़ैरज़बानें

1 मुहब्बत का दामन थामे रखें। लेकिन साथ ही रूहानी नेमतों को सरगरमी से इस्तेमाल में लाएँ, खुसूसन नबुव्वत की नेमत को। 2 ग़ैरज़बान बोलनेवाला लोगों से नहीं बल्कि अल्लाह से बात करता है। कोई उस की बात नहीं समझता क्योंकि वह रूह में भेद की बातें करता है। 3 इसके बरअक्स नबुव्वत करनेवाला लोगों से ऐसी बातें करता है जो उनकी तामीरो-तरक्की, हौसलाअफ़ज़ाई और तसल्ली का बाइस बनती हैं। 4 ग़ैरज़बान बोलनेवाला अपनी तामीरो-तरक्की करता है जबकि नबुव्वत करनेवाला जमात की।

5 मैं चाहता हूँ कि आप सब ग़ैरज़बानें बोलें, लेकिन इससे ज़्यादा यह खाहिश रखता हूँ कि आप नबुव्वत करें। नबुव्वत करनेवाला ग़ैरज़बानें बोलनेवाले से अहम है। हाँ, ग़ैरज़बानें बोलनेवाला भी अहम है बशर्तेकि अपनी ज़बान का तरजुमा करे, क्योंकि इससे खुदा की जमात की तामीरो-तरक्की होती है।

6 भाइयो, अगर मैं आपके पास आकर ग़ैरज़बानें बोलूँ, लेकिन मुकाशफे, इल्म, नबुव्वत और तालीम की कोई बात न करूँ तो आपको क्या फ़ायदा होगा? 7 बेजान साज़ों पर ग़ौर करने से भी यही बात सामने आती है। अगर बाँसरी या सरोद को किसी खास सुर के मुताबिक न बजाया जाए तो फिर सुननेवाले किस तरह पहचान सकेंगे कि इन पर क्या क्या पेश किया जा रहा है? 8 इसी तरह अगर बिगुल की आवाज़ जंग के लिए तैयार हो जाने के लिए साफ़ तौर से न बजे तो क्या फ़ौजी कमरबस्ता हो जाएंगे? 9 अगर आप साफ़ साफ़ बात न करें तो आपकी हालत भी ऐसी ही होगी। फिर आपकी बात कौन समझेगा? क्योंकि आप लोगों से नहीं बल्कि हवा से बातें करेंगे। 10 इस दुनिया में बहुत ज़्यादा ज़बानें बोली जाती हैं और इनमें से कोई भी नहीं जो बेमानी हो। 11 अगर मैं किसी ज़बान से वाकिफ़ नहीं तो मैं उस ज़बान में बोलनेवाले के नज़दीक अजनबी ठहरूँगा और वह मेरे नज़दीक। 12 यह उसूल आप पर भी लागू होता है। चूँकि आप रूहानी नेमतों के लिए तडपते हैं तो फिर खासकर उन नेमतों में माहिर बनने की कोशिश करें जो खुदा की जमात को तामीर करती हैं।

13 चुनाँचे ग़ैरज़बान बोलनेवाला दुआ करे कि इसका तरजुमा भी कर सके। 14 क्योंकि अगर मैं ग़ैरज़बान में दुआ करूँ तो मेरी रूह तो दुआ करती है मगर मेरी अक्ल बेअमल रहती है। 15 तो फिर क्या करूँ? मैं रूह में दुआ करूँगा, लेकिन अक्ल को भी इस्तेमाल करूँगा। मैं रूह में हम्दो-सना करूँगा, लेकिन अक्ल को भी इस्तेमाल में लाऊँगा। 16 अगर आप सिर्फ़ रूह में हम्दो-सना करें तो हाज़िरिन में से

जो आपकी बात नहीं समझता वह किस तरह आपकी शुकगुजारी पर “आमीन” कह सकेगा? उसे तो आपकी बातों की समझ ही नहीं आई।<sup>17</sup> बेशक आप अच्छी तरह खुदा का शुक कर रहे होंगे, लेकिन इससे दूसरे शख्स की तामीरो-तरक्की नहीं होगी।

18 मैं खुदा का शुक करता हूँ कि आप सबकी निसबत ज़्यादा गैरज़बानों में बात करता हूँ।<sup>19</sup> फिर भी मैं खुदा की जमात में ऐसी बातें पेश करना चाहता हूँ जो दूसरे समझ सकें और जिनसे वह तरबियत हासिल कर सकें। क्योंकि गैरज़बानों में बोली गई बेशुमार बातों की निसबत पाँच तरबियत देनेवाले अलफ़ाज़ कहीं बेहतर हैं।

20 भाइयो, बच्चों जैसी सोच से बाज़ आँ। बुराई के लिहाज़ से तो ज़रूर बच्चे बने रहें, लेकिन समझ में बालिग बन जाँ।<sup>21</sup> शरीअत में लिखा है, “रब फ़रमाता है कि मैं गैरज़बानों और अजनबियों के होंटों की मारिफ़त इस क़ौम से बात करूँगा। लेकिन वह फिर भी मेरी नहीं सुनेंगे।”<sup>22</sup> इससे ज़ाहिर होता है कि गैरज़बानों ईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि गैरईमानदारों के लिए। इसके बरअक्स नबुव्वत गैरईमानदारों के लिए इम्तियाज़ी निशान नहीं होती बल्कि ईमानदारों के लिए।

23 अब फ़र्ज़ करें कि ईमानदार एक जगह जमा हैं और तमाम हाज़िरीन गैरज़बानों बोल रहे हैं। इसी असना में गैरज़बान को न समझनेवाले या गैरईमानदार आ शामिल होते हैं। आपको इस हालत में देखकर क्या वह आपको दीवाना करार नहीं देंगे?<sup>24</sup> इसके मुक़ाबले में अगर तमाम लोग नबुव्वत कर रहे हों और कोई गैरईमानदार अंदर आए तो क्या होगा? वह सब उसे कायल कर लेंगे कि गुनाहगार है और सब उसे परख लेंगे।<sup>25</sup> यों उसके दिल की पोशीदा बातें ज़ाहिर हो जाएँगी, वह गिरकर अल्लाह को सिजदा करेगा और तसलीम करेगा कि फ़िलहकीकत अल्लाह आपके दरमियान मौजूद है।

### जमात में तरतीब की ज़रूरत

26 भाइयो, फिर क्या होना चाहिए? जब आप जमा होते हैं तो हर एक के पास कोई गीत या तालीम या मुकाशफ़ा या गैरज़बान या इसका तरजुमा हो। इन सबका मक़सद खुदा की जमात की तामीरो-तरक्की हो।<sup>27</sup> गैरज़बान में बोलते वक़्त सिर्फ़ दो या ज़्यादा से ज़्यादा तीन अशख़ास बोलें और वह भी बारी बारी। साथ ही कोई उनका तरजुमा भी करे।<sup>28</sup> अगर कोई तरजुमा करनेवाला न हो तो गैरज़बान बोलनेवाला जमात में ख़ामोश रहे, अलबत्ता उसे अपने आपसे और अल्लाह से

बात करने की आज्ञादी है। 29 नबियों में से दो या तीन नबुव्वत करें और दूसरे उनकी बातों की सेहत को परखें। 30 अगर इस दौरान किसी बैठे हुए शख्स को कोई मुकाशफा मिले तो पहला शख्स खामोश हो जाए। 31 क्योंकि आप सब बारी बारी नबुव्वत कर सकते हैं ताकि तमाम लोग सीखें और उनकी हौसलाअफजाई हो। 32 नबियों की रूहें नबियों के ताबे रहती हैं, 33 क्योंकि अल्लाह बेतरतीबी का नहीं बल्कि सलामती का खुदा है।

जैसा मुकद्दसीन की तमाम जमातों का दस्तूर है 34 खवातीन जमात में खामोश रहें। उन्हें बोलने की इजाज़त नहीं, बल्कि वह फरमाँबरदार रहें। शरीअत भी यही फरमाती है। 35 अगर वह कुछ सीखना चाहें तो अपने घर पर अपने शौहर से पूछ लें, क्योंकि औरत का खुदा की जमात में बोलना शर्म की बात है।

36 क्या अल्लाह का कलाम आपमें से निकला है, या क्या वह सिर्फ आप ही तक पहुँचा है? 37 अगर कोई खयाल करे कि मैं नबी हूँ या खास रूहानी हैसियत रखता हूँ तो वह जान ले कि जो कुछ मैं आपको लिख रहा हूँ वह खुदावंद का हुक्म है। 38 जो यह नज़रंदाज़ करता है उसे खुद भी नज़रंदाज़ किया जाएगा।

39 गरज़ भाइयो, नबुव्वत करने के लिए तड़पते रहें, अलबत्ता किसी को गैरज़बानें बोलने से न रोके। 40 लेकिन सब कुछ शायस्तगी और तरतीब से अमल में आए।

## 15

### मसीह का जी उठना

1 भाइयो, मैं आपकी तवज्जुह उस खुशखबरी की तरफ दिलाता हूँ जो मैंने आपको सुनाई, वही खुशखबरी जिसे आपने कबूल किया और जिस पर आप कायम भी हैं। 2 इसी पैगाम के वसीले से आपको नजात मिलती है। शर्त यह है कि आप वह बातें ज्यों की त्यों थामे रखें जिस तरह मैंने आप तक पहुँचाई हैं। बेशक यह बात इस पर मुनहसिर है कि आपका ईमान लाना बेमकसद नहीं था।

3 क्योंकि मैंने इस पर खास जोर दिया कि वही कुछ आपके सुपुर्द करूँ जो मुझे भी मिला है। यह कि मसीह ने पाक नविशतों के मुताबिक हमारे गुनाहों की खातिर अपनी जान दी, 4 फिर वह दफन हुआ और तीसरे दिन पाक नविशतों के मुताबिक जी उठा। 5 वह पतरस को दिखाई दिया, फिर बारह शागिर्दों को। 6 इसके बाद वह एक ही वक़्त पाँच सौ से ज्यादा भाइयों पर जाहिर हुआ। उनमें से बेशतर अब तक

ज़िंदा हैं अगरचे चंद एक इंतकाल कर चुके हैं। <sup>7</sup> फिर याकूब ने उसे देखा, फिर तमाम रसूलों ने।

<sup>8</sup> और सबके बाद वह मुझ पर भी ज़ाहिर हुआ, मुझ पर जो गोया कबल अज़ वक्रत पैदा हुआ। <sup>9</sup> क्योंकि रसूलों में मेरा दर्जा सबसे छोटा है, बल्कि मैं तो रसूल कहलाने के भी लायक नहीं, इसलिए कि मैंने अल्लाह की जमात को ईज़ा पहुँचाई। <sup>10</sup> लेकिन मैं जो कुछ हूँ अल्लाह के फ़ज़ल ही से हूँ। और जो फ़ज़ल उसने मुझ पर किया वह बेअसर न रहा, क्योंकि मैंने उन सबसे ज़्यादा जॉफ़िशानी से काम किया है। अलबत्ता यह काम मैंने खुद नहीं बल्कि अल्लाह के फ़ज़ल ने किया है जो मेरे साथ था। <sup>11</sup> ख़ैर, यह काम मैंने किया या उन्होंने, हम सब उसी पैग़ाम की मुनादी करते हैं जिस पर आप ईमान लाए हैं।

### जी उठने पर एतराज़

<sup>12</sup> अब मुझे यह बताएँ, हम तो मुनादी करते हैं कि मसीह मुरदों में से जी उठा है। तो फिर आपमें से कुछ लोग कैसे कह सकते हैं कि मुरदे जी नहीं उठते? <sup>13</sup> अगर मुरदे जी नहीं उठते तो मतलब यह हुआ कि मसीह भी नहीं जी उठा। <sup>14</sup> और अगर मसीह जी नहीं उठा तो फिर हमारी मुनादी अबस होती और आपका ईमान लाना भी बेफ़ायदा होता। <sup>15</sup> नीज़ हम अल्लाह के बारे में झूटे गवाह साबित होते। क्योंकि हम गवाही देते हैं कि अल्लाह ने मसीह को ज़िंदा किया जबकि अगर वाक़ई मुरदे नहीं जी उठते तो वह भी ज़िंदा नहीं हुआ। <sup>16</sup> गरज़ अगर मुरदे जी नहीं उठते तो फिर मसीह भी नहीं जी उठा। <sup>17</sup> और अगर मसीह नहीं जी उठा तो आपका ईमान बेफ़ायदा है और आप अब तक अपने गुनाहों में गिरिफ़्तार हैं। <sup>18</sup> हाँ, इसके मुताबिक़ जिन्होंने मसीह में होते हुए इंतकाल किया है वह सब हलाक हो गए हैं। <sup>19</sup> चुनौचे अगर मसीह पर हमारी उम्मीद सिर्फ़ इसी ज़िंदगी तक महदूद है तो हम इनसानों में सबसे ज़्यादा काबिले-रहम हैं।

### मसीह वाक़ई जी उठा है

<sup>20</sup> लेकिन मसीह वाक़ई मुरदों में से जी उठा है। वह इंतकाल किए हुआ की फ़सल का पहला फल है। <sup>21</sup> चूँकि इनसान के वसीले से मौत आई, इसलिए इनसान ही के वसीले से मुरदों के जी उठने की भी राह खुली। <sup>22</sup> जिस तरह सब इसलिए मरते हैं कि वह आदम के फ़रज़ंद हैं उसी तरह सब ज़िंदा किए जाएंगे जो मसीह के हैं। <sup>23</sup> लेकिन जी उठने की एक तरतीब है। मसीह तो फ़सल के पहले फल की

हैसियत से जी उठ चुका है जबकि उसके लोग उस वक़्त जी उठेंगे जब वह वापस आएगा। 24 इसके बाद ख़ातमा होगा। तब हर हुकूमत, इख़्तियार और कुव्वत को नेस्त करके वह बादशाही को खुदा बाप के हवाले कर देगा। 25 क्योंकि लाज़िम है कि मसीह उस वक़्त तक हुकूमत करे जब तक अल्लाह तमाम दुश्मनों को उसके पाँवों के नीचे न कर दे। 26 आखिरी दुश्मन जिसे नेस्त किया जाएगा मौत होगी। 27 क्योंकि अल्लाह के बारे में कलामे-मुक़द्दस में लिखा है, “उसने सब कुछ उस (यानी मसीह) के पाँवों के नीचे कर दिया।” जब कहा गया है कि सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया है, तो ज़ाहिर है कि इसमें अल्लाह शामिल नहीं जिसने सब कुछ मसीह के मातहत किया है। 28 जब सब कुछ मसीह के मातहत कर दिया गया तब फ़रज़ंद खुद भी उसी के मातहत हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके मातहत किया। यों अल्लाह सबमें सब कुछ होगा।

### जी उठने के पेशे-नज़र ज़िंदगी गुज़ारना

29 अगर मुरदे वाक़ई जी नहीं उठते तो फिर वह लोग क्या करेंगे जो मुरदों की खातिर बपतिस्मा लेते हैं? अगर मुरदे जी नहीं उठेंगे तो फिर वह उनकी खातिर क्यों बपतिस्मा लेते हैं? 30 और हम भी हर वक़्त अपनी जान ख़तरे में क्यों डाले हुए हैं? 31 भाइयो, मैं रोज़ाना मरता हूँ। यह बात उतनी ही यक़ीनी है जितनी यह कि आप हमारे ख़ुदावंद मसीह ईसा में मेरा फ़ख़र हैं। 32 अगर मैं सिर्फ़ इसी ज़िंदगी की उम्मीद रखते हुए इफ़िसुस में वहशी दरिदों से लड़ा तो मुझे क्या फ़ायदा हुआ? अगर मुरदे जी नहीं उठते तो इस क्रौल के मुताबिक़ ज़िंदगी गुज़ारना बेहतर होगा कि “आओ, हम खाएँ पिएँ, क्योंकि कल तो मर ही जाना है।”

33 फ़रेब न खाएँ, बुरी सोहबत अच्छी आदतों को बिगाड़ देती है। 34 पूरे तौर पर होश में आएँ और गुनाह न करें। आपमें से बाज़ ऐसे हैं जो अल्लाह के बारे में कुछ नहीं जानते। यह बात मैं आपको शर्म दिलाने के लिए कहता हूँ।

### मुरदे किस तरह जी उठेंगे

35 शायद कोई सवाल उठाए, “मुरदे किस तरह जी उठते हैं? और जी उठने के बाद उनका जिस्म कैसा होगा?” 36 भई, अक्ल से काम लें। जो बीज आप बोते हैं वह उस वक़्त तक नहीं उगता जब तक कि मर न जाए। 37 जो आप बोते हैं वह वही पौदा नहीं है जो बाद में उगेगा बल्कि महज़ एक गंगा-सा दाना है, ख़ाह गंदुम का हो या किसी और चीज़ का। 38 लेकिन अल्लाह उसे ऐसा जिस्म देता

है जैसा वह मुनासिब समझता है। हर क्रिस्म के बीज को वह उसका खास जिस्म अता करता है।

39 तमाम जानदारों को एक जैसा जिस्म नहीं मिला बल्कि इनसानों को और क्रिस्म का, मवेशियों को और क्रिस्म का, परिदों को और क्रिस्म का, और मछलियों को और क्रिस्म का।

40 इसके अलावा आसमानी जिस्म भी हैं और ज़मीनी जिस्म भी। आसमानी जिस्मों की शान और है और ज़मीनी जिस्मों की शान और। 41 सूरज की शान और है, चाँद की शान और, और सितारों की शान और, बल्कि एक सितारा शान में दूसरे सितारे से फरक है।

42 मुरदों का जी उठना भी ऐसा ही है। जिस्म फ़ानी हालत में बोया जाता है और लाफ़ानी हालत में जी उठता है। 43 वह ज़लील हालत में बोया जाता है और जलाली हालत में जी उठता है। वह कमज़ोर हालत में बोया जाता है और क़वी हालत में जी उठता है। 44 फ़ितरती जिस्म बोया जाता है और रूहानी जिस्म जी उठता है। जहाँ फ़ितरती जिस्म है वहाँ रूहानी जिस्म भी होता है। 45 पाक नविशतों में भी लिखा है कि पहले इनसान आदम में जान आ गई। लेकिन आखिरी आदम ज़िंदा करनेवाली रूह बना। 46 रूहानी जिस्म पहले नहीं था बल्कि फ़ितरती जिस्म, फिर रूहानी जिस्म हुआ। 47 पहला इनसान ज़मीन की मिट्टी से बना था, लेकिन दूसरा आसमान से आया। 48 जैसा पहला खाकी इनसान था वैसे ही दीगर खाकी इनसान भी हैं, और जैसा आसमान से आया हुआ इनसान है वैसे ही दीगर आसमानी इनसान भी हैं। 49 यों हम इस वक़्त खाकी इनसान की शक्लो-सूरत रखते हैं जबकि हम उस वक़्त आसमानी इनसान की शक्लो-सूरत रखेंगे।

### मौत पर फ़तह

50 भाइयो, मैं यह कहना चाहता हूँ कि खाकी इनसान का मौजूदा जिस्म अल्लाह की बादशाही को मीरास में नहीं पा सकता। जो कुछ फ़ानी है वह लाफ़ानी चीज़ों को मीरास में नहीं पा सकता।

51 देखो मैं आपको एक भेद बताता हूँ। हम सब वफ़ात नहीं पाएँगे, लेकिन सब ही बदल जाएँगे। 52 और यह अचानक, आँख झपकते में, आखिरी बिगुल बजते ही रूनुमा होगा। क्योंकि बिगुल बजने पर मुरदे लाफ़ानी हालत में जी उठेंगे और हम बदल जाएँगे। 53 क्योंकि लाज़िम है कि यह फ़ानी जिस्म बक्का का लिबास पहन ले और मरनेवाला जिस्म अबदी ज़िंदगी का। 54 जब इस फ़ानी और मरनेवाले

जिस्मे ने बक्का और अबदी ज़िंदगी का लिबास पहन लिया होगा तो फिर वह कलाम पूरा होगा जो पाक नविशतों में लिखा है कि

“मौत इलाही फ़तह का लुक़मा हो गई है।

55 ऐ मौत, तेरी फ़तह कहाँ रही?

ऐ मौत, तेरा डंक कहाँ रहा?”

56 मौत का डंक गुनाह है और गुनाह शरीअत से तक्कवियत पाता है। 57 लेकिन खुदा का शुक्र है जो हमें हमारे खुदावंद ईसा मसीह के वसीले से फ़तह बख़्शता है।

58 गरज़, मेरे प्यारे भाइयो, मज़बूत बने रहें। कोई चीज़ आपको डॉक्टरों से कर दे। हमेशा खुदावंद की खिदमत जाँफ़िशानी से करें, यह जानते हुए कि खुदावंद के लिए आपकी मेहनत-मशक्कत रायगों नहीं जाएगी।

## 16

यरूशलम की जमात के लिए चंदा

1 रही चंदे की बात जो यरूशलम के मुक़द्दसीन के लिए जमा किया जा रहा है तो उसी हिदायत पर अमल करें जो मैं गलतिया की जमातों को दे चुका हूँ। 2 हर इतवार को आपमें से हर कोई अपने कमाए हुए पैसों में से कुछ इस चंदे के लिए मखसूस करके अपने पास रख छोड़े। फिर मेरे आने पर हदियाजात जमा करने की ज़रूरत नहीं पड़ेगी। 3 जब मैं आऊँगा तो ऐसे अफ़राद को जो आपके नज़दीक काबिले-एतमाद हैं खुतूत देकर यरूशलम भेजूँगा ताकि वह आपका हदिया वहाँ तक पहुँचा दें। 4 अगर मुनासिब हो कि मैं भी जाऊँ तो वह मेरे साथ जाएंगे।

5 मैं मक्किदुनिया से होकर आपके पास आऊँगा क्योंकि मक्किदुनिया में से सफ़र करने का इरादा रखता हूँ। 6 शायद आपके पास थोड़े अरसे के लिए ठहरूँ, लेकिन यह भी मुमकिन है कि सर्दियों का मौसम आप ही के साथ काटूँ ताकि मेरे बाद के सफ़र के लिए आप मेरी मदद कर सकें। 7 मैं नहीं चाहता कि इस दफ़ा मुखतसर मुलाक़ात के बाद चलता बनूँ, बल्कि मेरी खाहिश है कि कुछ वक़्त आपके साथ गुज़ारूँ। शर्त यह है कि खुदावंद मुझे इजाज़त दे।

8 लेकिन ईदे-पतिकुस्त तक मैं इफ़िसुस में ही ठहरूँगा, 9 क्योंकि यहाँ मेरे सामने मुअस्सिर काम के लिए एक बड़ा दरवाज़ा खुल गया है और साथ ही बहुत-से मुखालिफ़ भी पैदा हो गए हैं।

10 अगर तीमुथियुस आए तो इसका खयाल रखें कि वह बिलारखौफ आपके पास रह सके। मेरी तरह वह भी खुदावंद के खेत में फसल काट रहा है। 11 इसलिए कोई उसे हक़ीर न जाने। उसे सलामती से सफ़र पर रवाना करें ताकि वह मुझ तक पहुँचे, क्योंकि मैं और दीगर भाई उसके मुंतज़िर हैं।

12 भाई अपुल्लोस की मैंने बड़ी हौसलाअफ़ज़ाई की है कि वह दीगर भाइयों के साथ आपके पास आए, लेकिन अल्लाह को कतअन मंज़ूर न था। ताहम मौका मिलने पर वह ज़रूर आएगा।

### नसीहतें और सलाम

13 जागते रहें, ईमान में साबितकदम रहें, मरदानगी दिखाएँ, मज़बूत बने रहें।

14 सब कुछ मुहब्बत से करें।

15 भाइयो, मैं एक बात में आपको नसीहत करना चाहता हूँ। आप जानते हैं कि स्तिफ़नास का घराना अखया का पहला फल है और कि उन्होंने अपने आपको मुक़द्दसीन की खिदमत के लिए वक्फ़ कर रखा है। 16 आप ऐसे लोगों के ताबे रहें और साथ ही हर उस शख्स के जो उनके साथ खिदमत के काम में जॉफ़िशानी करता है।

17 स्तिफ़नास, फ़ुरतूनातुस और अखीकुस के पहुँचने पर मैं बहुत खुश हुआ, क्योंकि उन्होंने वह कमी पूरी कर दी जो आपकी ग़ैरहाज़िरी से पैदा हुई थी।

18 उन्होंने मेरी रूह को और साथ ही आपकी रूह को भी ताज़ा किया है। ऐसे लोगों की कदर करें।

19 आसिया की जमातें आपको सलाम कहती हैं। अकविला और प्रिसकिल्ला आपको खुदावंद में पुरजोश सलाम कहते हैं और उनके साथ वह जमात भी जो उनके घर में जमा होती है। 20 तमाम भाई आपको सलाम कहते हैं। एक दूसरे को मुक़द्दस बोसा देते हुए सलाम कहें।

21 यह सलाम मैं यानी पौलुस अपने हाथ से लिखता हूँ।

22 लानत उस शख्स पर जो खुदावंद से मुहब्बत नहीं रखता।

ऐ हमारे खुदावंद, आ! 23 खुदावंद ईसा का फ़ज़ल आपके साथ रहे।

24 मसीह ईसा में आप सबको मेरा प्यार।

किताबे-मुकदस

**The Holy Bible in the Urdu language, Urdu Geo  
Version, Hindi Script**

Copyright © 2019 Urdu Geo Version

Language: اردو (Urdu)

This translation is made available to you under the terms of the Creative Commons Attribution-Noncommercial-No Derivatives license 4.0.

You may share and redistribute this Bible translation or extracts from it in any format, provided that:

You include the above copyright and source information.

You do not sell this work for a profit.

You do not change any of the words or punctuation of the Scriptures.

Pictures included with Scriptures and other documents on this site are licensed just for use with those Scriptures and documents. For other uses, please contact the respective copyright owners.

2023-11-29

---

PDF generated using Haiola and XeLaTeX on 22 Feb 2024 from source files dated 30 Nov 2023

a1ee0020-7263-5fce-8289-9d7a7ac2d299